12

परमेश्वर की पवित्र याजकाई

''... जो हमसे प्रेम रखता है, और जिसने अपने लोहू के द्वारा हमें पापों से छुड़ाया है। और हमें एक राज्य और अपने पिता परमेश्वर के लिए याजक भी बना दिया; उसी की महिमा और पराक्रम युगानुयुग रहे। आमीन'' (प्रकाशितवाक्य 1:5, 6)।

एक वयस्क पुरुष और अमेरिकी नागरिक के रूप में, मैं दो अलग-अलग कानूनों के अधीन रहा हूं। बचपन में मुझ पर अपने देश में नाबालिगों के लिए बना कानून लागू होता था। उस समय, मुझे कार चलाने, मकान खरीदने, बैंक में खाता खोलने या मतदान का अधिकार नहीं था। मुझे अपने माता-पिता की निगरानी में रहना पड़ता था। किसी भी दस्तावेज़ पर मेरे हस्ताक्षर, मेरे माता या पिता में से किसी एक की गवाही के बिना मान्य नहीं होते थे। मुझे बच्चा माना जाता था, और मेरे जीवन के संचालन और मेरी सुरक्षा के लिए विशेष कानून था।

अब, एक वयस्क के रूप में मुझ पर दूसरे कानून लागू होते हैं। अब मैं कार खरीद सकता हूं और चला सकता हूं, मकान खरीद सकता हूं, अपना निजी बैंक खाता खोल सकता हूं और राजनेताओं को चुनने के लिए मतदान भी कर सकता हूं। इन कानूनों में मुझे एक व्यक्ति के रूप में अधिक मान्यता दी गई है, परन्तु इन विशेषाधिकारों के साथ-साथ मेरे व्यक्तिगत दायित्व भी हैं। मैं काम करके धन कमाना चुन सकता हूं, परन्तु उस कमाए हुए धन पर कर देने का मेरा दायित्व है। मुझे अपने माता-पिता की अनुमति के बिना मर्जी से निर्णय लेने का अधिकार है, परन्तु अपने सारे कामों के लिए मैं कानून के प्रति जवाबदेह हूं। यह एक नया कानून है जिसके अधीन मैं एक वयस्क के रूप में रहता हूं और यह कानून उस कानून से अलग है जो बचपन में मुझ पर लागू होता था।

पहली शताब्दी के यहूदी भी ऐसी ही परिस्थितियों से गुजरे थे। उन्होंने अपने जीवन में दो प्रकार के आत्मिक नियमों या वाचाओं को देखा था। वे मन्दिर में बलिदान चढ़ाकर, वार्षिक उत्सव और पर्व मनाकर, विशेष रीति से नियुक्त किए गए याजकों के द्वारा परमेश्वर के सामने जाकर, और मूसा द्वारा इस्राएल को दिए गए दूसरे सभी नियमों को मानकर मूसा की व्यवस्था के अधीन रह रहे थे। फिर मसीह के पुनरुत्थान के बाद आने वाले पहले

पिन्तेकुस्त के दिन यरूशलेम में मसीहियत आरज़्भ हो गई थी। कुछ यहूदियों द्वारा उसकी कलीसिया के रूप में मसीह के पीछे चलने का निर्णय लेने पर, वे मूसा की व्यवस्था को त्यागकर नियमों की एक नई व्यवस्था के अधीन आकर परमेश्वर की नई वाचा में प्रवेश कर गए। नई वाचा के अधीन मसीही होने के कारण उन्हें विश्वास से, मसीह के प्रेरितों द्वारा प्रकट की गई उसकी इच्छा के अनुसार चलना था और मसीह की आत्मिक देह के रूप में परमेश्वर की सेवा और आराधना करनी आवश्यक थी।

मूसा की व्यवस्था से मसीहियत में यहूदियों के इस स्थानांतरण से शायद उनके लिए एक सच्चाई से बड़ी राहत यह मिली थी कि परमेश्वर ने अब याजकों के रूप में अपनी सेवा के लिए अलग से किसी को नहीं चुना था, बल्कि अपने सब लोगों को अपने याजकों के रूप में चुन लिया था। नई वाचा के अनुसार, मसीह ने उन सबको जो उसके लहू से धोए जाते हैं, लेकर ''एक राज्य और अपने पिता परमेश्वर के लिए याजक'' बना दिया (प्रकाशितवाज़्य 1:6)। मसीह में, हम ''एक चुना हुआ वंश, और राज-पदधारी, याजकों का समाज, और पवित्र लोग, और (परमेश्वर की) निज प्रजा'' हैं (1 पतरस 2:9)। हमें मसीह की कलीसिया में मिलाया गया है जो ''जीवते पत्थरों की नाईं आत्मिक घर बनती जाती है, जिससे हम याजकों का पवित्र समाज बनकर, ऐसे आत्मिक बलिदान चढ़ाएं, जो यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर को ग्राह्य हैं'' (1 पतरस 2:5)। सब मसीहियों की इस याजकाई से यहूदियों की तरह हमें भी आश्चर्य, भय तथा कृतज्ञता के गहरे अर्थ से प्रेरित होते हुए चौकन्ना रहना चाहिए।

कलीसिया की याजकाई की विशेषता के समझ आने पर, हर एक मसीही उत्साहित होगा। पिछले युग में, परमेश्वर लेवियों को अपने याजक बनाकर सज़्मान देता था; परन्तु वर्तमान में, परमेश्वर ने मसीह में आने वाले प्रत्येक व्यज़्ति को अपने राज्य का याजक बनाकर सज़्मानित किया है।

ज़्या परमेश्वर के सभी बच्चों की याजकाई के बारे में इस सच्चाई ने हमें मन्त्रमुग्ध किया है? ज़्या हमने इसका महत्व देखा है? आइए इस विषय पर और गहराई से विचार करते हैं।

परमेश्वर की ओर से याजकाई का एक विशेषाधिकार

मसीही बनने वालों को याजक बनने का विशेषाधिकार प्राप्त है। परमेश्वर ने उन्हें पुराने नियम के याजकों की तरह ही, अपने साथ विशेष सज़्बन्ध देकर सज़्मान दिया है।

मूसा के युग में याजकों को परमेश्वर के साथ विशेष संगति प्रदान की जाती थी। वे प्रतिदिन परमेश्वर के साथ इस तरह रहते थे जिसका अन्य इस्राएलियों को अधिकार नहीं था। उनके तज़्बू डेरे के प्रतीक स्थान पर, सीधे वेदी के सामने, परमेश्वर की उपस्थिति में लगाए जाते थे। इस्राएल के कनान में बसने पर, याजकों को, लेवियों के साथ भूमि के आबंटन के बजाय, उनकी विशेष सज़्पज़ि के रूप में परमेश्वर मिला था। उन्हें रहने के लिए

अड़तालीस नगर और उनके आस-पास की चरागाहें तो मिली ही थीं (यहोशू 21:41) परन्तु उनकी सहायता अन्य कबीलों से आनी थी ताकि वे अपना पूरा समय परमेश्वर की सेवा में दे सकें । इस्राएलियों द्वारा वेदी पर भेंट करने के लिए लाया गया प्रत्येक बलिदान परमेश्वर के सामने याजक द्वारा भेंट किया जाता था। परमेश्वर ने याजकों को अपने साथ संगति रखने के लिए अलग किया हुआ था।

पुराने नियम के समय याजकों को मिलने वाला परमेश्वर के साथ यह मज़बूत सम्बन्ध मसीही युग में प्रत्येक मसीही को दिया गया है। सुसमाचार को मानकर परमेश्वर के पास आने वाले किसी भी व्यक्ति को उसके परिवार में गोद लिया जाता है और उसे ''उसके अपने लोग'' के रूप में देखा जाता है (तीतुस 2:14)। किसी समय ''कुछ भी नहीं'' होने वाले लोग अब ''परमेश्वर की प्रजा'' हैं (1 पतरस 2:10)। जो लोग परमेश्वर से ''दूर थे'' (इफिसियों 2:17) उन्हें मसीह यीशु के लहू के द्वारा ''निकट'' लाया गया है (इफिसियों 2:13)। परमेश्वर (यूहन्ना 14:23), मसीह (इफिसियों 3:17; कुलुस्सियों 1:27) और पवित्र आत्मा (1 कुरिन्थियों 6:19, 20) हमारे अन्दर वास करते हैं। हम प्रतिदिन पिता, यीशु मसीह (1 यूहन्ना 1:3) और पवित्र आत्मा (रोमियों 8:5) की संगति में चलते हैं।

मूसा पत्थर की दो पट्टियों पर उकेरी उन आज्ञाओं की पहली प्रति लेकर जब सीनै पर्वत से नीचे आया तो उसने इस्राएलियों को सोने के बछड़े बनाकर उसकी पूजा करते पाया। उसने वे पट्टियां भूमि पर फेंक दीं, जैसे वह कह रहा हो, ''ये दस आज्ञाएं लेकर सीनै पर्वत से मेरे नीचे उतरने से पहले ही, तुम लोगों ने उन्हें तोड़ दिया!'' उसने उस बछड़े का चूरा बनाकर, पानी की सतह पर फैलाकर लोगों को पिला दिया। मूसा डेरे के फाटक की ओर खड़ा होकर और कहने लगा, ''जो जो लोग परमेश्वर की ओर हैं वे मेरी तरफ आकर खड़े हो जाएं!'' उसी समय, लेवी का गोत्र बड़े साहस, वफ़ादारी और समर्थन के साथ मूसा के पास आ गया। मूसा ने लेवी के गोत्र को डेरे में जाकर उस बछड़े की पूजा करने वाले दोषियों को मारने की आज्ञा दी। उन्होंने वफ़ादारी से उसकी इस आज्ञा का पालन करके परमेश्वर के न्याय को पूरा किया। परमेश्वर के प्रति उनकी वफ़ादारी के कारण, परमेश्वर ने उन्हें मूसा के शेष युग के दौरान अपने चुने हुए याजक होने का विशेषाधिकार देकर सम्मानित किया। अमराम के परिवार के लोग उसके याजक थे, और शेष लेवी परमेश्वर की सेवा में उनकी सहायता करते थे। इस प्रकार, लेवियों को वह उच्च सम्मान अर्थात परमेश्वर की ओर से संसार में उसके चुने हुए सेवक होने का सम्मान दिया!

आज, मसीह के द्वारा दि गए उस सम्मान को कोई ले सकता है जो पुराने नियम के समय केवल लेवियों को ही मिलता था। विश्वास और आज्ञाकारिता से आने वाले हर व्यक्ति को परमेश्वर के अलग किए हुए लोगों के रूप में अर्थात उसकी पवित्र याजकाई के लिए मिला लिया जाता था।

इस आश्चर्यजनक सच्चाई में हमारे लिए एक संदेश है। पहला, इससे हमें यह स्मरण होना चाहिए कि परमेश्वर ने अपने छुड़ाए हुए लोगों को अपनी दृष्टि में महत्व दिया है। हमें जो पहले कुछ भी नहीं थे उन्हें परमेश्वर की विशेष प्रजा होने के लिए ऊंचा उठाया गया है।

हम केवल ''लोग'' ही नहीं बल्कि ''परमेश्वर के लोग'' हैं। इसके अतिरिज़्त, इस सच्चाई से संसार में हमारा उद्देश्य भी स्पष्ट हो जाना चाहिए। हम विशेष अर्थ में परमेश्वर के सेवक हैं। इसके अलावा, इस सच्चाई से हमारे अन्दर कृतज्ञता का न खत्म होने वाला आचरण उत्पन्न होना चाहिए। आज हम यहां केवल परमेश्वर के अनुग्रह से ही हैं।

परमेश्वर तक याजकाई पहुंच

मसीह की आत्मिक देह के सदस्यों की परमेश्वर तक याजकाई पहुंच है। हमें उस तक पहुंचने के लिए किसी दूसरे मनुष्य की सहायता की आवश्यकता नहीं है। हमें मसीह के द्वारा परमेश्वर तक जाने की खुली छूट है।

यहूदी लोग परमेश्वर तक केवल मानवीय याजक द्वारा ही पहुंच सकते थे। परमेश्वर यहूदियों से किसी नबी या याजक के माध्यम बात करता था और यहूदी लोग परमेश्वर के पास याजक के द्वारा ही बलिदान चढ़ाते थे। यहूदी लोगों के लिए उनके और परमेश्वर के बीच की दूरी को मिटाने के लिए एक मानवीय ''मध्यस्थ'' आवश्यक होता था।

अब, मसीह में, मसीही व्यज़्ति यीशु के द्वारा सीधे परमेश्वर तक जा सकता है। क्रूस के द्वारा मनुष्य और परमेश्वर के बीच की सभी बाधाएं यहूदी और अन्य जाति दोनों के लिए हटा दी गई हैं। उस एकता के भाग के एक सिरे पर जहां यहूदी और अन्यजाति मसीह में मिलते हैं, पौलुस ने इस पहुंच का उल्लेख किया: ''ज़्योंकि उस ही के द्वारा हम दोनों की एक आत्मा में पिता के पास पहुंच होती है'' (इफिसियों 2:18)। बाद में, पौलुस ने लिखा, ''जिस में हम को उस पर विश्वास रखने से हियाव और भरोसे से निकट आने का अधिकार है'' (इफिसियों 3:12)। मसीही व्यज़्ति को परमेश्वर के पास आने के लिए मध्यस्थ के रूप में केवल यीशु की ही आवश्यकता है: ''ज़्योंकि परमेश्वर एक ही है: और परमेश्वर और मनुष्यों के बीच भी एक ही बिचवई है, अर्थात मसीह यीशु जो मनुष्य है'' (1 तीमुथियुस 2:5)।

मैंने अपने जीवन में दो तरह के प्रधान देखे हैं। दोनों में से अधिक निकट हार्डिंग विश्वविद्यालय के प्रधान हैं, जहां मैं प्रतिदिन बाइबल पढ़ाता हूं। वह मेरे बॉस हैं। मैं उन्हें चैपल में हर दिन देखता हूं, शिक्षकों की सभाओं में और हॉल में अज़्सर उनसे बात करता हूं। मैं उनसे सामाजिक कार्यक्रमों में मिलता हूं और कॉलेज चर्च में आराधना के समय हम इकट्ठे होते हैं। मैं उनसे प्राय: बात करता रहता हूं और कई वर्षों से उनके इतना निकट हूं कि मैं उन्हें अपना निजी मित्र कहता हूं। मैं उन्हें दिन में किसी भी समय टेलीफोन कर सकता हूं, और किसी भी विषय पर बात करने की अनुमति ले सकता हूं। यदि वह मेरे फोन का जवाब देने के लिए उपलज़्ध नहीं होते तो जितनी जल्दी हो सके, मेरे फोन का उज़र देते हैं।

मेरे जीवन में दूसरा प्रधान अमेरिका का राष्ट्रपति है। मेरी उनसे कभी निजी भेंट नहीं हुई। मैंने उन्हें आमने-सामने केवल एक ही बार देखा है और वह भी कुछ दूरी से जब वह एक परेड में अपनी कार में सवार थे। मैं उनके बारे में जो कुछ भी जानता हूं वह सब मुझे समाचार पत्र पढ़ने या टीवी देखने से पता चला है। मैं उन्हें अपना मित्र नहीं कह सकता। मैं

उनके व्यक्तिगत जीवन के बारे में कुछ भी नहीं जानता और वह भी मेरे बारे में कुछ नहीं जानते। यदि मुझे किसी महत्वपूर्ण विषय पर उनसे बात करनी हो, तो मुझे उनसे साथ बात करने की अनुमति नहीं होगी। मुझ से केवल यही प्रतिज्ञा की जाएगी कि मेरा संदेश उन तक पहुंच जाएगा। उनकी दुनिया मेरी दुनिया से बहुत अलग है। मैं उनके जीवन और शक्ति में केवल वोट डालने वाली मशीन द्वारा ही पहुंच सकता हूं जब प्रत्येक चार वर्ष बाद हमारे देश के राष्ट्रपति का चुनाव होता है। उनके किए कामों से मैं थोड़ा सा प्रभावित होता हूं, परन्तु वे मुझे कभी नहीं देखते, और केवल मैं ही उन्हें दूर से देख सकता हूं।

इन दो प्रधानों में क्या भिन्नता है ? केवल यही कि मैं एक के पास तो पहुंच सकता हूं, परन्तु दूसरे तक मेरी कोई पहुंच नहीं है। भिन्नता उस एक शब्द ''पहुंच'' में है। क्योंकि मैं एक मसीही हूं, इसलिए परमेश्वर से मेरे सम्बन्ध की तुलना हार्डिंग विश्वविद्यालय के प्रधान के साथ मेरे सम्बन्ध से की जाएगी। मैं मसीह द्वारा परमेश्वर के पास स्वतन्त्रता से बिना किसी रोक टोक के जा सकता हूं। मैं किसी भी समय प्रार्थना में उस तक पहुंच सकता हूं। मैं उसकी संगति तथा सामर्थ में हर रोज चलता हूं। क्योंकि वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर है इसलिए जब मैं प्रार्थना करता हूं तो उसे मुझे प्रतीक्षा कराने या बाद में बात करने की आवश्यकता नहीं पड़ती। मसीह के कारण, उसकी उपस्थिति का द्वार मेरे प्रवेश के लिए थोड़ा सा खुला रहता है। वह न केवल मुझे अपनी उपस्थिति में आने की अनुमति देता है, बल्कि अन्दर आने पर मेरा स्वागत भी करता है। वह मेरी संगति चाहता है, और मैं उसकी। वह सचमुच मेरा स्वर्गीय पिता है।

मूसा की व्यवस्था के अधीन रहने वाले यहूदी परमेश्वर तक ऐसे नहीं पहुंच सकते थे जैसे एक मसीही के रूप में मैं। वे लेवी याजकों द्वारा परमेश्वर के पास जाते थे। परमेश्वर उनके साथ रहता था, परन्तु उस तक उनकी पहुंच केवल मानवीय याजकाई द्वारा सीमित थी।

याजकाई की इस पहुंच से जो मसीही लोगों को मिली है, न केवल हमें उत्साहित होना चाहिए, बल्कि हमें इससे ऊर्जा भी मिलनी चाहिए। परमेश्वर अपनी उपस्थिति में हमारा स्वागत करता है, हमारी संगति से आनन्दित होता है और एक पिता द्वारा अपने बच्चों को अपने पास आने की अनुमति देने की तरह वह हमें अपने तक पहुंचने की छूट देता है। आइए परमेश्वर के साथ संगति के इस अवसर को प्रार्थना, संगति और आत्मिक सेवा के द्वारा काम में लाएं।

परमेश्वर के लिए याजकाई का काम

मसीही होने के कारण, हमें याजकाई का काम मिला है। हम याजकों का काम करते हैं।

पुराने नियम के दिनों में, याजक पूरे इस्राएल के लिए परमेश्वर के पास बलिदान भेंट करते थे। परमेश्वर की आराधना के समय वेदी के पवित्र स्थान पर केवल याजक ही प्रवेश कर सकते थे। याजकों द्वारा वेदी में साधारण इस्राएलियों के वेदी के प्रवेश द्वार पर खड़े होने पर प्रतिनिधित्व किया जाता था। प्रायश्चित के महान दिन, महायाजक परम पवित्र स्थान

अर्थात परमेश्वर की उपस्थिति में प्रायश्चित के बलिदान का लहू लेकर प्रवेश करता था, जिसके द्वारा प्रायश्चित के अगले दिन सारी जाति के पाप धोए जाते थे। आराधना के इन दायित्वों के अलावा, याजकों को परमेश्वर की ओर से सारे इस्राएल में उसके नियम सिखाने की विशेष आज्ञा थी ताकि उसकी जाति के लोग अपने लिए उसकी इच्छा से आश्वस्त हों।

पुराने नियम के समय में याजकों के इन पवित्र कार्यों के समान इस मसीही युग में मसीहियों को करने के लिए कहा जाता है। मसीही युग में किसी पशु का बलिदान भेंट नहीं किया जाता, बल्कि भजन गाने, प्रार्थना करने, प्रभु भोज लेने, चंदा देने, परमेश्वर के वचन का अध्ययन करने, और परमेश्वर को मसीही सेवा भेंट करके प्रत्येक मसीही आत्मिक बलिदान चढ़ाता है। गाने के विषय में, इब्रानियों की पत्री के लेखक ने इस प्रकार से कहा है, ''इसलिए हम उसके द्वारा स्तुति रूपी बलिदान अर्थात उन होंठों का फल जो उसके नाम का अंगीकार करते हैं, परमेश्वर के लिए सर्वदा चढ़ाया करें'' (इब्रानियों 13:15)। प्रकाशितवाज़्य में, सांकेतिक भाषा में, पृथ्वी पर पवित्र लोगों की प्रार्थनाओं को सोने की वेदी पर रखे गए धूप के रूप में वर्णित किया गया है (प्रकाशितवाज़्य 8:3)। पृथ्वी पर कलीसिया की सुन्दरता को बढ़ाने वाले उद्देश्यों में से एक ''आत्मिक बलिदान चढ़ाना है, जो यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर को ग्राह्य हैं'' (1 पतरस 2:5)। इब्रानियों की पत्री का लेखक परमेश्वर के उपस्थिति के द्वार को मसीह के लहू के द्वारा मसीही लोगों के लिए सदा खुला हुआ दिखाता है:

> सो हे भाइयो, जब कि हमें यीशु के लोहू के द्वारा उस नए और जीवते मार्ग से पवित्र स्थान में प्रवेश करने का हियाव हो गया है। जो उसने परदे अर्थात अपने शरीर में से होकर, हमारे लिए अभिषेक किया है, और इसलिए कि हमारा ऐसा महान याजक है, जो परमेश्वर के घर का अधिकारी है। तो आओ; हम सच्चे मन, और पूरे विश्वास के साथ, और विवेक का दोष दूर करने के लिए हृदय पर छिड़काव लेकर, और देह को शुद्ध जल से धुलवाकर परमेश्वर के समीप जाएं (इब्रानियों 10:19-22)।

मसीह यीशु हमारा महान, अनन्त याजक बन गया है और हर मसीही एक याजक है जो किसी भी समय, कहीं भी उसके द्वारा परमेश्वर के पास आ सकता है। हमारे उद्धारकर्ज़ा ने हमारे लिए ''अपने ही लोहू के द्वारा एक ही बार पवित्र स्थान में प्रवेश किया'' (इब्रानियों 9:12)। पुराने नियम के महायाजक पशुओं का बलिदान भेंट करते थे और पूरी कौम के प्रायश्चित के लिए वर्ष में एक बार लहू लेकर जाते थे, परन्तु मसीह अपनी ही भेंट लेकर स्वर्ग में गया है (इब्रानियों 9:24, 25)। अब उस निजी बलिदान के द्वारा जो मसीह ने दिया है, वह सदा के लिए हमारा महायाजक बना रहता है, इस तरह परमेश्वर के सामने हमारे लिए एक निजी याजकाई उपलज़्ध कराता है। इसीलिए, मसीही लोगों को आज्ञा है कि परमेश्वर के वचन को सारे संसार में पहुंचाएं ताकि सब लोग उद्धार करने वाले उसके अनुग्रह को जान लें (मरकुस 16:15, 16)।

सामान्यत: किसी वस्तु के कार्य से उसकी पहचान होती है। एक लज़्बी हत्थी और खोदने के लिए इसके सिरे पर तेज़धार पज़ी लगे होने पर हम किसी औज़ार को खुर्पी कह सकते हैं। किसी छोटे औज़ार पर छोटी हत्थी और कील ठोंकने के लिए चपटी इस्तेमाल होने वाली धातु लगी होने के कारण हम इसे हथौड़ी कह सकते हैं। ज़्योंकि मसीही लोग परमेश्वर के सामने याजकाई का काम करते हैं, इसलिए हमें हैरान नहीं होना चाहिए कि नया नियम हमें याजक कहता है। नये नियम में तीन बार, मसीही लोगों को विशेष रूप से याजक के रूप में (प्रकाशितवाज़्य 1:6; 5:10; 20:6) और कई बार उनकी याजकाई को उनके काम से बताया गया है (1 पतरस 2:5, 9; इब्रानियों 13:15)।

इस सच्चाई से कि हमें परमेश्वर के याजकों के रूप में प्रभु द्वारा इस संसार में काम करने के लिए बुलाया गया है, हमें अपने काम और सेवा के महत्व का स्पष्ट दर्शन मिल जाना चाहिए। पुराने नियम का कोई भी याजक अपने आस पास की सारी गतिविधियों के महत्व को समझता था, ज़्योंकि वह परमेश्वर के सामने आराधना और सेवा में उसके लोगों की अगुआई के लिए परमेश्वर का एक विशेष सेवक होता था। उसी प्रकार, आज परमेश्वर की पवित्र याजकाई के रूप में, हम कृतज्ञता से आराधना करते, सेवा करते और सिखाते हैं कि परमेश्वर ने हमें पृथ्वी पर यह अद्वितीय काम दिया है।

परमेश्वर के याजकों के रूप में काम करने वाले होने के कारण हमें ज़िम्मेदारी का अहसास होना चाहिए। ट्रक बनाने वाली एक फर्म ने ट्रक ड्राइवरों के लिए अलग-अलग दिशा में भार ले जाने के लिए बाहर निकलने के गेट पर एक साइन बोर्ड लगाया हुआ था। जिसमें लिखा हुआ था, ''इस गेट के आगे, आप कंपनी का प्रतिनिधित्व करते हैं।'' उन ट्रक ड्राइवरों को देखकर लोगों को कंपनी का पता चल जाता था। परमेश्वर के याजक होने के कारण हम संसार में परमेश्वर के प्रतिनिधि हैं। हे साथी याजक, ज़्या हम अपनी जिज़्मेदारी को गंभीरता से निभा रहे हैं।

सारांश

फिर तो, मसीही लोग मसीही युग में परमेश्वर की पवित्र याजकाई हैं। हमें परमेश्वर तक पहुंचने की याजकाई मिली है, हमें याजकाई के विशेषाधिकार दिए गए हैं, और हम संसार में याजकाई के काम को पूरा करते हैं। हमें सबसे बड़ा सज़्मान मिला है, ज़्योंकि हमें यहोवा के निज लोग होने के लिए अलग किया गया है। हमें सबसे बड़ी बुलाहट मिली है, ज़्योंकि हमें पवित्र अर्थात परमेश्वर जैसे होने के लिए बुलाया गया है। हमें सबसे बड़ा काम मिला है, ज़्योंकि हमें परमेश्वर के याजक का काम दिया गया है।

ज़्या आप मसीही हैं? ज़्या आपने मसीह को अपने पाप धोने और आपको परमेश्वर के याजक बनाने की अनुमति दी है? हमें मसीही बनने की इच्छा रखनी चाहिए, न केवल इसलिए कि मसीही को ज़्या मिलता है, बल्कि इसलिए भी कि मसीही ज़्या है और ज़्या करता है।

हमारे गीतों से हमारी दिलचस्पी, विश्वास और गुणों का पता चलता है। स्वर्ग में भी

यही बात सत्य है। स्वर्ग में कौन से गीत गाए जा रहे हैं। उस गीत की ओर ध्यान दें जो स्वर्ग के आंगन में उस समय गाया जा रहा था जब मेमने ने उससे जो सिंहासन पर बैठा है, सात मोहरों वाली पुस्तक ली थी:

> तू इस पुस्तक के लेने, और उसकी मुहरें खोलने के योग्य है; ज़्योंकि तू ने वध होकर अपने लोहू से हर एक कुल, और भाषा, और लोग, और जाति में से परमेश्वर के लिए लोगों को मोल लिया है। और उन्हें हमारे परमेश्वर के लिए एक राज्य और याजक बनाया; और वे पृथ्वी पर राज्य करते हैं (प्रकाशितवाज़्य 5:9, 10)।

यदि आपको अपने देश के प्रधान द्वारा उसके मंत्रिमंडल के भाग के रूप में सेवा करने के लिए कहा जाए तो ज़्या आप मान जाएंगे? बहुत अधिक सज़्भावना है कि आप मान जाएंगे। यदि आपको अपने नगर की सेवा एक विशेष सेवक के रूप में करने के लिए अपने नगर का मेयर बनने के लिए कहा जाए तो ज़्या आप इस पद को ग्रहण कर लेंगे? निश्चित रूप से। सृष्टि का सृजनहार, परमेश्वर जिसने आपको अपने पुत्र के द्वारा छुटकारा देने की पेशकश की है, आपसे अपने पास आने और उसकी तथा इस संसार की उसके पवित्र याजक के रूप में सेवा करने के लिए कह रहा है। ज़्या आप इसे स्वीकार करेंगे?

अध्ययन एवं चर्चा के लिए प्रश्न

1. अपने देश में नाबालिगों तथा वयस्कों के लिए बने कानूनों की तुलना करें।
2. वर्णन करें कि पहली शताज़्दी में यहूदी लोग किस प्रकार उलझन में पड़े होंगे कि वे किस व्यवस्था के अधीन हैं, अर्थात वे मूसा की व्यवस्था को मानें या मसीह की नई व्यवस्था को।
3. आपको ज़्या लगता है कि मसीही बनने वाले एक यहूदी के दिमाग में वास्तव में ज़्या फर्क आया होगा?
4. पुराने नियम के याजक तथा परमेश्वर में ज़्या विशेष सज़्बन्ध था?
5. आज हमें परमेश्वर के याजक होने के कारण किस प्रकार महत्व दिया जाता है या योग्य बनाया जाता है?
6. वाज़्यांश ''परमेश्वर तक पहुंच'' का ज़्या अर्थ है?
7. परमेश्वर तक पहुंचने के परिणामस्वरूप मिलने वाली विशेष आशिषों की सूची बनाएं।
8. आज हम परमेश्वर के याजकों के रूप में कैसे काम करते हैं?
9. वे आयतें बताएं जिनमें मसीहियों को परमेश्वर के याजक के रूप में दिखाया गया है।
10. प्रकाशितवाज़्य 5:9,10 किस प्रकार विश्वासियों की याजकाई को प्रभावित करता है।
11. आज परमेश्वर का याजक कैसे बना जा सकता है?
12. ज़्या आज कोई परमेश्वर का याजक बन सकता है?